24 रचनात्मक कार्यशालाएँ

Ckky vuqdy LFkkuk dk fuek.k



रुद्रेश

यादगिर जिले के सुरपुर तालुक के तीर्थ नामक एक दूरदराज गाँव की प्राथमिक शाला के कक्षा चार और पाँच के छह बच्चे एक अस्थायी मंच पर उपस्थित थे। उनकी आयु 10 से 12 वर्ष के बीच थी। वे 'ग्राम पंचायत' पर पाँच मिनट का एक रोल–प्ले कर रहे थे। इस गम्भीर विषय को तैयार करने के लिए उन्हें केवल 15 मिनट का समय दिया गया था।

जब रोल–प्ले समाप्त हुआ तब वहाँ उपस्थित 40 महत्त्वपूर्ण दर्शकों ने बड़े जोरदार तरीके से उनकी प्रशंसा की। बालकों ने अपनी भूमिका अच्छी तरह से निभाई थी, हालाँकि यह विषय उनके लिए जरा गहन और गम्भीर था। विषय, स्वरूप और संवाद बहुत अच्छे थे। बच्चों ने पेयजल और बुनियादी स्वच्छता जैसे स्थानीय व ज्वलन्त मुद्दों पर जोर दिया था। इसे पूरी गम्भीरता के साथ प्रस्तुत किया गया था। बच्चों का अभिनय आत्मविश्वास से भरा हुआ था। केवल पाँच मिनट में उन्होंने यह बात एकदम स्पष्ट कर दी कि ग्राम पंचायत अपने कर्तव्यों को निभाने में विफल रही है। यह रोल–प्ले रचनात्मक कार्यशाला का एक हिस्सा था।

ऐसी ही एक रचनात्मक कार्यशाला तिम्मापुर गाँव में अनियमित रूप से स्कूल जाने वाले बच्चों के लिए चलाई जा रही थी। एक बच्चा इस कार्यशाला में नहीं आया था, लेकिन वह अकसर छुप–छुपकर अन्य बच्चों को चित्र बनाते, रंग भरते, गाते और नाचते देखा करता था। अगले दिन वह भीतर आया, इलियास नामक समन्वयक को अपना परिचय दिया और कार्यशाला में भाग लेने की इच्छा जताई। इस बच्चे का नाम दाऊद था और वह छठी कक्षा में पढ़ता था। उसे अन्दर बुला लिया गया और वह दो दिनों तक बड़ी सक्रियता से कार्यशाला में भाग लेता रहा। इस घटना से उसमें बदलाव आया और वह नियमित रूप से स्कूल आने लगा।

बाल अनुकूल स्कूल पहल (सी.एस.एफ.आई.)[1], सुरपुर द्वारा 2008 से आयोजित की जाने वाली इन रचनात्मक कार्यशालाओं से ऐसे ही कई सकारात्मक परिणाम सामने आए हैं। इन कार्यशालाओं को संचालित करने के पीछे यह विचार था कि सी.एस.एफ.आई. टीम को बच्चों के साथ सार्थक गतिविधि में संलग्न किया जाए ताकि वे यह समझ सकें कि बच्चे कैसे सीखते हैं, कैसे व्यवहार करते हैं आदि। पर इससे भी महत्त्वपूर्ण बात यह थी कि मार्गदर्शी (सी.एस.एफ.आई. टीम सदस्य) यह समझ सकें और सीख सकें कि उन्हें बच्चों के साथ कैसे व्यवहार करना चाहिए। एक उद्देश्य यह भी था कि स्कूल में सहज और निडर वातावरण बनाने का अनुभव प्राप्त किया जाए और बच्चों की रचनात्मकता और आत्म–अधिगम के लिए जगह बनाई जाए।

इन कार्यशालाओं ने हमें इस बात का विश्वास दिलाया कि हम बच्चों के मन में सजा का भय या आतंक पैदा किए बिना भी उनके साथ काम कर सकते हैं और इस प्रकार का वातावरण बहुत उत्पादक और सुखद होता है। इससे यह बात भी गलत साबित हुई कि बच्चों की पिटाई न करने से वे बिगड़ जाते हैं।

जैसा कि पहले बताया गया है हमारी कार्यशालाओं में इस बात पर जोर दिया जाता है कि बच्चों के लिए स्वतंत्रता का माहौल बनाया जाए और उनमें चीजों को बर्बाद न करने एवं दूसरों को चोट न पहुँचाने की जागरूकता पैदा की जाए। हमारी कार्यशाला पेन्टिंग से शुरू होती है। इसमें पहली बात है रंगों से खेलना। हम बच्चों से कहते हैं कि वे अकेले और समूह में रंगों के साथ खेलें। इस गतिविधि से वे कई चीजें सीखते हैं जैसे रंगों का मिश्रण करना, इस मिश्रण से कौन–से नए रंग बनते हैं, एक ही रंग से हल्के और गहरे रंग कैसे बनते हैं आदि। इस गतिविधि के अन्त

में वे शुभकामनाओं और बधाई के कार्ड बनाकर बड़े गर्व के साथ उन्हें घर ले जाते हैं। बच्चे अपने चेहरे पर मेकअप का आनन्द भी लेते हैं।

गायन सत्र में वे पहले अपनी पाठ्यपुस्तक के गीत गाते हैं और बाद में स्कूल के गाने। फिर वे उन गानों को गाते हैं जो उन्हें आते हैं। अन्त में वे स्वयं गीत रचकर गाते हैं। नृत्य के सत्र ऊर्जा से भरपूर होते हैं। पेन्टिंग, गायन और नृत्य के बाद कहानियों की बारी आती है। कहानी सुनाने और कहानी लिखने की गतिविधि उन्हें सोचना सिखाती है। इस बिन्दु पर आकर हम मुखौटे बनाना सिखाते हैं और तत्पश्चात नाटक की ओर बढ़ते हैं। हमारे पास किसी चरित्र को प्रस्तुत करने, उसे बनाने और उसकी स्थिति को बदलने के लिए विभिन्न थियेटर खेल हैं। इन खेलों को बच्चे बहुत पसन्द करते हैं। उन्हें तात्कालिक उपाय करना भी अच्छा लगता है। हम किसी अन्तिम उत्पाद की योजना नहीं बनाते। लेकिन कार्यशाला के अन्तिम दिन समापन सत्र के दौरान कार्यशाला में जो कुछ भी बनाया या सीखा है उसे प्रदर्शित करते हैं।

इन कार्यशालाओं से हमारा अनुभव समृद्ध हुआ। कला के प्रकारों ने हमें बच्चों को आनन्दपूर्वक काम में लगाए रखने में मदद दी। हमारे पास नौ से बारह वर्ष की आयु के छात्रों का असमान समूह था—कुछ बुद्धिमान थे, कुछ औसत थे और उन पर धीमी गति से सीखने वाले बच्चे का ठप्पा लगा हुआ था। कुछ अनियमित थे तो कुछ स्कूल छोड़कर जा चुके थे। शुरू में तो उन्हें कार्यशाला में लाने और गतिविधियों में शामिल करने में मुश्किल होती थी। लेकिन बाद में उनकी संख्या बढ़ जाती और तीसरे दिन तक हमारे पास 40 से अधिक बच्चे हो जाते।

एक कार्यशाला में, एक छात्र शेर का मुखौटा पहनकर चिल्ला रहा था, “मैं जंगल का राजा हूँ, सबको मेरी बात माननी होगी।” इस बालक की ओर इशारा करते हुए श्री तायप्पा नामक एक शिक्षक ने कहा,“जो विद्यार्थी कक्षा में एक शब्द भी नहीं बोलते थे, उन्होंने यहाँ बहुत आत्मविश्वास और गर्व के साथ प्रदर्शन किया है। तीसरे दिन के अन्त में वे पैने संवादों के साथ कठपुतलियों का संचालन बड़ी कुशलता से कर रहे हैं।” शर्मीले बच्चे या तो मुखौटे पहनकर नाच रहे थे और या कठपुतलियाँ नचा रहे थे ताकि उन्हें दर्शकों का सीधे—सीधे सामना न करना पड़े। इस शर्मीले समूह ने अपने संकोची आवरण से बाहर आकर उत्कृष्ट प्रदर्शन किया था। लेकिन कुछ कठपुतली प्रदर्शन के बाद पुनः अपने शर्मीलेपन में लौट गए।

हमने यह बात सुनिश्चित की कि सभी विद्यार्थी इसमें भाग लें और उनके लिए बहुत सारी सामग्री तैयार रखी ताकि वे उनका उपयोग बिना किसी रोक—टोक कर सकें। उनके साथ प्यार और स्नेहपूर्वक व्यवहार किया गया और उन्हें चोट पहुँचाना या डाँटना मना था। यह बात मार्गदर्शियों[2] और शिक्षकों दोनों पर लागू होती थी। हमने साथियों के साथ की जाने वाली समूह गतिविधियों और एक दूसरे की मदद करने की भावना को प्रोत्साहन दिया। बिना पूर्व तैयारी के स्थानीय विषयों पर रोल प्ले तैयार करके दर्शकों के सामने प्रस्तुत किए गए। इस प्रकिया के दौरान हमारे मार्गदर्शी विभिन्न रूपों में भाषा का उपयोग कर बच्चों के शब्द भण्डार को विकसित करते और उनमें समस्या को सुलझाने का कौशल विकसित करते। वे उनके शैक्षिक और सामाजिक कौशलों को मजबूत करते।

नाटक, रोल प्ले, कहानी निर्माण, कहानी सुनाना और कठपुतली कला जैसे कला रूपों से बच्चों में सोचने, निष्कर्ष निकालने, समझने, अभिव्यक्त करने, तार्किक निष्कर्ष निकालने तथा तत्काल अभिनय करने जैसे कौशलों का निर्माण करने में सहायता मिलती है। चित्रकला, कठपुतली कला, मुखौटा निर्माण, मिट्टी का काम आदि से कल्पना, सौन्दर्यबोध, संरचना, बुनावट और आकार व रंगों की तुलना की भावना का निर्माण होने के साथ—साथ मनो—संचालन (साइकोमोटर) कौशल भी विकसित होते हैं। समूह में काम करने के कारण बच्चों में मानवीय सम्बन्ध के निर्माण का कौशल निर्मित होता है क्योंकि वे समूह में एक दूसरे की शक्तियों और सीमाओं को समझकर मदद लेते हैं। इसके अलावा अपने साथियों से सीखना, समूह भावना, टीम में काम करना, सहयोग करना, दूसरों की भावनाओं को

समझना, संवेदनशील होना, संप्रेषणीयता आदि ऐसी चीजें हैं जो न केवल विद्यार्थियों के विद्यालयीन वर्षों में बल्कि पूरे जीवन में आवश्यक होती हैं। अन्तत: इससे भाषा का विकास करने, विचारों और कौशलों का पता लगाने तथा अपने और दूसरों को समझने में मदद मिलती है।

इन बाल अनुकूल कार्यशालाओं में बच्चों को असफल होने का भय बिलकुल नहीं होता। यह बात सीमाओं को तोड़ने में मदद करती है तथा जो कुछ वे चाहते हैं उसे करने की स्वतंत्रता उनकी रचनात्मकता और मौलिकता को बढ़ाने में सहायक होती है। मैं एक उदाहरण देना चाहूँगा। यालगी नामक गाँव की कार्यशाला में प्रतिभागियों के सामने कठपुतली को तैयार करने की विधि के प्रदर्शन के बाद उनसे व्यक्तिगत रूप से कठपुतली बनाने को कहा गया। कई बच्चों ने सफेद धागे या रद्दी कागज पर काला रंग लगाकर कठपुतली के बाल बनाए। पर कक्षा पाँच की छात्रा रेशमा ने अपने ही बाल काटकर कठपुतली के सिर पर चिपका दिए। उसका रूमाल स्कर्ट के रूप इस्तेमाल किया गया था! ऐसा न तो कहा गया था और न ही अपेक्षित था–यह उसके काम के साथ जुड़ने की हद थी। कई बच्चों ने कठपुतलियों के लिए दिलचस्प टोपियाँ और मुखौटे भी बनाए थे।

हमने सीखा है...

सुरपुर में तीन वर्षों से बच्चों के लिए रचनात्मक कार्यशालाओं का आयोजन करने के अनुभव से हमने यह सीखा है कि –

- बच्चों की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए गतिविधियों का डिजाइन बच्चों की रुचि और गति पर आधारित होना चाहिए।
- कला के विभिन्न रूप उन बच्चों को भी काम में लगाए रखने में सहायक होते हैं जो बच्चे पढ़ाई में रुचि नहीं लेते।
- बच्चों की रुचि की अवधि बहुत कम होती है, उनकी रुचियाँ विविध होती हैं, अत: गतिविधियों में विविधता होनी चहिए।
- स्वतंत्र वातावरण में रचनात्मकता प्रफुल्लित होती है।
- बच्चे जो पारम्परिक चीजें बनाते हैं, उन्हें कुछ अलग चीजें बनाने की प्रेरणा देने का कौशल सुगमकर्ताओं में होना चाहिए।
- शिक्षकों को इसमें शामिल करना जरूरी है क्योंकि वे ही इसे आगे ले जाएँगे।
- कला के विविध रूप बच्चों को अभिव्यक्ति, खोज और प्रयोग के पर्याप्त अवसर देते हैं।

स्कूलों में जो कार्यक्रम होते हैं, उनमें कला के इन रूपों को मनोरंजन का साधन माना जाता है। हमारा प्रयास है कि इन कार्यशालाओं में शिक्षकों को शामिल किया जाए और उन्हें इस बात के लिए प्रेरित किया जाए कि वे कला के इन रूपों का उपयोग रचनात्मक तरीके से अपनी कक्षा की प्रक्रियाओं में करें। वैसे हम यह जानते हैं कि ऐसा करना एक बहुत बड़ी चुनौती है।

इन रचनात्मक कार्यशालाओं ने बाल अनुकूल वातावरण का निर्माण करने में हमारा आत्मविश्वास बढ़ाया है और हम यह बात शिक्षकों तक पहुँचा पाए हैं। हमने पाया है कि जब शिक्षक कुछ देखते हैं और उसका अनुभव करते हैं तब वे उसमें विश्वास करते हैं!

कठोर प्रशिक्षण

बच्चे रचनात्मक कार्यशाला का आनन्द लेते हैं लेकिन उसका आयोजन हमारे लिए एक चुनौती भरा अनुभव था। पहले तो हमें कार्यशाला का संचालन करने के लिए अपनी क्षमता का निर्माण करना था और उसके बाद उसे बच्चों तक ले जाना था। हमें दोहरी भूमिका निभानी थी–एक तो सुगमकर्ता की और दूसरी एक शोधकर्ता की–क्योंकि हमें कार्यशाला का आयोजन करना था और साथ ही बच्चों के व्यवहार का अवलोकन करना था और समूह की भावना को भी समझना था।

हमने एक चरणबद्ध प्रशिक्षण मॉड्यूल की योजना बनाई जिसमें हमारे मार्गदर्शियों के लिए पर्याप्त सहायता का प्रावधान था। पहले इस विषय के एक विशेषज्ञ ने

मार्गदर्शियों के लिए एक रचनात्मक कार्यशाला संचालित की और इस कार्यशाला के आधार पर आठ मार्गदर्शियों के एक समूह ने बच्चों के लिए कार्यशाला संचालित की। इससे हमें प्रत्यक्ष ज्ञान मिला और बच्चों के साथ काम करने की समझ भी बनी। कुछ गतिविधियाँ सफल रहीं तो कुछ नहीं। हमने अपनी कार्यशाला की समीक्षा की एवं और अधिक जानकारी व अपने अनुभव के साथ एक बार फिर से योजना बनाई। इस चरण में मार्गदर्शियों के जोड़े बनाए गए और हर जोड़े ने बच्चों के लिए कार्यशाला संचालित की। फिर हर मार्गदर्शी ने एक कार्यशाला संचालित की। अब तक हमारे मार्गदर्शी कार्यशाला संचालित करने के लिए पर्याप्त आत्मविश्वास प्राप्त कर चुके थे। अब उन्होंने धीरे–धीरे शिक्षकों को इसमें शामिल करना शुरू किया, जिन्होंने अन्तिम चरण में कार्यशाला की समीक्षा करने में मदद की। अब तक सुरपुर तालुक के विभिन्न स्कूलों में 250 कार्यशालाएँ आयोजित की जा चुकी हैं। अब हमारी टीम बच्चों की आवश्यकताओं और स्थानीय सन्दर्भ के आधार पर कार्यशालाओं को डिजाइन करने में सक्षम है।

lUnHk %

1. बालमित्र स्कूल पहल: बाल अनुकूल स्कूल पहल अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन और कर्नाटक सरकार की संयुक्त पहल है। यह क्षमता और जवाबदेही के निर्माण से, सभी हितधारकों के साथ साझेदारी में, सभी बच्चों के लिए, बाल अनुकूल तरीके से, अनवरत रूप से, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने की प्रक्रिया को दर्शाने का एक प्रयोग है। इस पहल में उत्तर–पूर्व कर्नाटक के यादगिर जिले में सुरपुर विकासखण्ड के सभी सरकारी प्राथमिक विद्यालय शामिल किए गए हैं।
2. मार्गदर्शी : मार्गदर्शी अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन में कार्यरत हैं जो विद्यालयों के साथ मिलकर काम करते हैं और कक्षा की प्रक्रियाओं में शिक्षक की सहायता करते हैं। प्रत्येक मार्गदर्शी 12 विद्यालयों को सहयोग करता है।

रुद्रेश *सुरपुर, कर्नाटक में बाल अनुकूल स्कूल पहल (CFSI) का नेतृत्व करते हैं। उन्होंने गुलबर्गा विश्वविद्यालय से सामाजिक कार्य में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त की है और पिछले नौ वर्षों से अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन में कार्यरत हैं। उन्होंने CFSI की गतिविधियों की अवधारणा के निर्माण और उन्हें लागू करने के साथ–साथ सरकार और समुदाय के सम्बन्धों का प्रबन्धन भी किया है। उनसे rudresh@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।*
अनुवादः *नलिनी रावल*